# cj[kk jkuh vc fdlh dh ekgrkt ugh

## ,d if'k{k.kkFkh dh lQyrk dh dgkuh mldh tckuh

मैं, बरखा रानी राँची जिला के नामकुम प्रखंड के महुआटोली ग्राम की रहनेवाली हूँ। मेरे पिता, दिनेश महली का स्वर्गवास हो चुका है। मेरी मां, संयुक्ता देवी सेवा भारती नामक एक सामाजिक संस्था में कार्य करती हैं। मेरे दो भाई हैं। पिताजी की मृत्यु के बाद घर की आर्थिक स्थिति अत्यंत ही दयनीय हो गई। उस समय मैं कक्षा 8 में पढ़ रही थी। मां के लिए घर का खर्च चलाने के अलावे मेरी और मेरे भाईयों की पढ़ाई का खर्च उठा पाना मुश्किल ही नहीं असंभव हो गया। कारणवश, मुझे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं तो नहीं पढ़ पाई लेकिन मैं अपने भाईयों की पढ़ाई किसी भी सूरत में बाधित नहीं होने दूँगी। इसलिए मैं भी कोई–न–कोई काम कर घर की आय बढ़ाना चाहती थी। इसी दौरान मुझे अपनी एक सहेली से मालूम हुआ कि नामकुम बाजार में जन शिक्षण संस्थान–विकास भारती, राँची द्वारा ब्यूटीशियन कोर्स का प्रशिक्षण प्रारंभ होने वाला है। मैंने वहां की प्रशिक्षिका किरण चौधरी से संपर्क किया और उनसे प्रशिक्षण में अपना नाम लिखाने के लिए आग्रह किया। उन्होंने मेरा फॉर्म भरवाकर मेरा नाम सूची में दर्ज कर दिया। इस प्रकार जन शिक्षण संस्थान–विकास भारती, राँची द्वारा संचालित **C;Vh dYpj ,oa gsYFk d;j** पाठ्यक्रम में सत्र 2009–10 में मैंने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मैं यह तय नहीं कर पा रही थी कि अब क्या करूँ। कारण पूँजी के अभाव में ब्यूटी पार्लर खोलना मेरे लिए संभव नहीं था। प्रशिक्षण के दौरान ही मुझे संस्थान के पदाधिकारियों द्वारा यह बतलाया गया था कि प्रशिक्षण प्राप्त कर शुरुआती दौर में ब्यूटी किट्स लेकर घर–घर घूम कर प्रशिक्षणार्थी अपनी सेवा देकर पैसा कमा सकती हैं। अतः मैंने भी कुछ पैसों की व्यवस्था कर एक ब्यूटी किट खरीदा और आसपास के घरों में घूम–घूम कर आई–ब्रो, फेशियल, मेनिक्योर, पेडिक्योर, बाल कटिंग, आदि करके कुछ पैसा कमाने लगी। शुरू–शुरू में बहुत ज्यादा आमदनी नहीं होती थी लेकिन मैंने धैर्य नहीं खोया और इसे अपना रोजगार बना लिया। धीरे–धीरे मुझे अपने गांव के अलावे अगल–बगल के गांवों में एक ब्यूटीशियन के रूप में पहचान मिलने लगी और मेरी रोज की आय भी बढ़ने लगी। इस तरह मेरा उत्साह दिनोंदिन बढ़ता ही गया। मैंने अपनी आमदनी में से बचत करके कुछ पैसा इकट्ठा करना शुरू किया और वर्ष 2013 में मेरे पास इतना पैसा हो गया कि मैं अब अपना पार्लर खोल सकती थी। अतः अक्टूबर 2013 में बहुबाजार में संतपाल परिसर के बगल में **ßlf"V yfMt C;Vh ikyj** नाम से अपना पार्लर खोल लिया। पार्लर के लिए कमरे का मैं 2,500/– रुपया प्रतिमाह किराया देती हूँ। किराया देने एवं अन्य सामग्रियों के क्रय में हुए खर्च के अलावे 5,000/– प्रति माह बचत कर लेती हूँ। अपने भाईयों को पढ़ाने का मेरा सपना अब पूरा हो रहा है। मेरा एक भाई इंटर में तथा दूसरा हाई स्कूल में पढ़ रहा है। जन शिक्षण संस्थान से प्राप्त प्रशिक्षण ने मेरे जीवन की धारा ही बदल दी। अब मैं अपने व्यवसाय से संतुष्ट हूँ और परिवार की जिम्मेवारियों को निभाने में अपनी मां का सहयोग कर रही हूँ।